UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 2 काक श्रृगाल्योः कथा (अनिवार्य संस्कृत)

एकदा ..... आसीत्।

हिन्दी अनुवादः
एक बार एक कौआ भूखा था। भोजन प्राप्त करने के लिए वह इधर-उधर घूमा। सहसो उसे एक रोटी प्राप्त हुई। वह एक पेड़ की शाखा के ऊपर बैठा और उस रोटी को खाने के लिए सोचने लगा और उस समय ही एक सियारिन ने कौवे और रोटी को देखा। उसने उस रोटी को लेने के लिए विचार किया। वह उस वृक्ष के नीचे बैठ गई, जिसके ऊपर कौआ बैठा था।

श्रृगाली काकम् ..... भवतः।

हिन्दी अनुवादः
सियारिन कौए से बोली, “अरे कौए! तुम अत्यन्त सुन्दर हो। तुम्हारा रंग मोहक है। तुम्हारे दोनों पंख मनोहर हैं। तुम्हारी आवाज अति मधुर है। तुम्हारी आवाज सुनकर मेरे कान तृप्त हो गए हैं।”

स्वप्रशंसा ..... अखादत् च।

हिन्दी अनुवादः
अपनी प्रशंसा सुनकर कौआ अति प्रसन्न हुआ। उसने जैसे ही काँव-काँव की आवाज करनी आरम्भ की, उसके मुख से रोटी भूमि पर गिर पड़ी। इसके लिए ही सियारिन ने उसकी प्रशंसा की थी। शीघ्र ही रोटी लेकर खाई और उस स्थान से भाग गई।

https://www.evidyarthi.in/